प्रकाशित: 30 सितम्बर 2017 को दैनिक जागरण में प्रकाशित -

कर्तव्य पथ के महानायक राम

कैप्टन आर विक्रम सिंह।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम निर्माता भी हैं जिन्होंने संस्कृति और इतिहास के घुमावदार रास्तों को सीधा करने का काम अद्भुत तरीके से किया। राम का वनगमन और वह भी दक्षिण दिशा में? यह कई प्रश्न खड़े करता हैऔर उनके उत्तर भी देता है। वह उत्तर दिशा की ओर हिमाद्रि की सुरम्य तलहटियों की ओर भी तो प्रस्थान कर सकते थे, लेकिन नहीं। उन्होंने दक्षिण की ओर जाने का निश्चय किया और शायद यह जानते हुए कि यह क्षेत्र धर्म और संभावनाओं का क्षेत्र था। उनके साथ मात्र दो और लोग थे। सामने दक्षिण विजय का महान लक्ष्य था। उस घटनाक्रम की कल्पना करें जब विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को राजा दशरथ से लगभग बलपूर्वक ले आते हैं। क्या मात्र आश्रम, यज्ञों, आश्रमवासियों की रक्षा करना ही उनका उद्देश्य रहा होगा? नहीं, वह तो एक महत प्रेरणा से राम को लेने गए थे। उस प्रेरणा के लिए भारत सदा ऋषि विश्वामित्र का ऋणी रहेगा। ऋषि विश्वामित्र ने राम को मात्र शस्त्र विद्या ही नहीं सिखाई, बल्कि राजनीति और कूटनीति की भी शिक्षा दी। इसी के साथ एक राष्ट्रदृष्टि भी दी। आश्रम के शांत वातावरण और अग्नि के प्रकाश में दोनों भाइयों के साथ उन्होंने जब दक्षिण में धर्म साम्राज्य के विस्तार की संभावनाओं पर गहनचर्चाएं की होंगी तो आकार लेता हुआ राष्ट्र और श्रीलंका तक लहराता समुद्र उनकी कल्पनाओं में उतर आया होगा। ऋषि ने अपनी भविष्य दृष्टि से इस अभियान में राम-लक्ष्मण की भूमिका भी देखी होगी। सैन्य विजय हो या धर्म विजय, यह द्वंद्व भी उभरा होगा। दक्षिण में धर्म विस्तार के प्रयासों में आ रहे प्रतिरोध को तो वह देख ही रहे थे। न जाने कितने आश्रम उजड़े थे और न जाने कितने ऋषि- मुनियों की हत्याएं हुई थीं। ये घटनाएं विश्वामित्र के दृढ़ निश्चय को डिगा नहीं सकीं। वह राम- लक्ष्मण के मन की गहराइयों में दक्षिण विजय का महत्वाकांक्षी लक्ष्य मजबूती से स्थापित कर इतिहास पटल से अंर्तधान हो जाते हैं। अब राम हैं और उनका लक्ष्य है। राम को अब दक्षिण जाना ही था। सेनाएं लेकर विजय अभियान पर निकलना राम के उद्दात्त लक्ष्यों के विपरीत होता, साथ ही मात्र धर्म प्रचारक होना भी लक्ष्य तक न पहुंचा पाता। इसलिए आवश्यक था कि एक धर्मयोद्धा के रूप में साम्राज्य एवं धर्म, दोनों आयाम साथ लेकर चला जाए। उन्होंने इस कार्य में आर्यावर्त का सहयोग नहीं लिया। तुलसी बाबा की कथा में दक्षिण के वनवासियों के प्रति राम का अनुराग कदम कदम पर प्रकट भी होता है। वनवास के आदेश के उपरांत संपूर्ण आर्यावर्त के सामान्य जन की सहानुभूति राजमहलों के षड़यंत्र के शिकार राम के लिए थी।दक्षिण के वनवासी समाज के लिए भी वह अपने अधिकार से बेदखल किए गए राजकुमार थे। माता कैकेयी की स्वार्थपरता ने राम को एक बड़े धर्मसंकट से मुक्त कर दिया था। राम के दक्षिण प्रस्थान की कथा जैसे भारत का भाग्य विधाता स्वयं लिख रहा हो। शनि की महादशा आरंभ होने को थी और राम के जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण कालखंड उनकी

प्रतीक्षा कर रहा था। दक्षिण भारत का वनवासी समाज भगवान शिव का आराधक रहा है। गले में सर्प, शरीर पर बाघम्बर डाले शिव हमारे आदि धर्म के प्रतीक हैं। अपनी यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर राम शिव एवं शिव भक्तों से परिचित होते चलते हैं। शिव के प्रति दक्षिण समाज का अनुराग उन्हें अभिभूत करता है। धर्म के विकास और विस्तार के क्रम में हमारे ऋषि व्यवस्थाकारों की समावेशी दृष्टि ने बहुत सी स्थानीय स्तुत्य परंपराओं को सम्मानजनक स्थान दिया है। भारत सदियों से सांस्कृतिक जातीय समागम का केंद्र रहा है। मंगोल, यवन, हूण, कुषाण जैसे बहुत से जातीय समूह हमारे समाज के अंग बने। साथ ही भारत धर्म में कई सभ्यताएं अपनी समस्त परंपराओं, पद्धतियों के साथ समाहित होती गईं। श्यामवर्णीय राम उत्तर और दक्षिण की वय: संधि पर कहीं स्थित हैं। राम इस एकात्म हो रहे समाज के सनातन प्रतीक के रूप में सामने आते हैं। चित्रकूट का क्षेत्र कभी राम के सैनिकों के शिक्षण-प्रशिक्षण का बड़ा केंद्र बना। सरल स्वभाव के वनवासी ग्रामवासी थे तो शोषक अत्याचारी भी थे। वनवासी राम की शरण में आते हैं। यहां से प्रतिरोध फिर संघर्ष का क्रम आरंभ होता है। राम ने उन्हीं पीड़ितों, अशक्तों की सेनाएं बनाई, उन्हें खड़ा किया, रणनीतियां सिखाई और संघर्षशील बनाया। बहुत से युद्ध हुए, लेकिन निराशा के धनीभूत क्षणों में भी राम ने कभी धैर्य और कर्तव्य का पथ नहीं छोड़ा। कविवर निराला ने कितना सत्य लिखा है, वह एक और मन रहा राम का जो न थका, जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय। राम का राज्य बढ़ता गया। दक्षिण समाज राम का महान सहयोगी, मित्र एवं भक्त बना। इनमें निषादराज हैं, केवट समाज है और बहुत से वनवासी समूह भी। हनुमान, सुग्रीव, अंगद जामवंत जैसे मित्र एवं भक्त भी राम की सेना के महान सेनापति बने। कहां अयोध्या का अर्थहीन विलासी जीवन कहां धर्म के महान लक्ष्य का संधान। राम की शिवभक्ति उन्हें वनवासियों में प्रिय बनाती गई। जब वह समुद्रतट पर रामेश्वरम के रूप में शिव की स्थापना करते हैं तो उनकी शिवभक्ति अपनी पूर्णता को पहुंचती है। शिवभक्ति हमारी धर्म संस्कृति में दक्षिण से आती है। वह ऋग्वेदिक देवता रूद्र के साथ एकाकर होते हैं। शिव हमारे सनातन धर्म के मेरूदंड हैं। उनके बिना तो सनातन हिंदू धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वैदिक परंपराएं, विधियां क्रमश: भारतीय धर्म में समाहित होने लगती हैं और सनातन धर्म का विशाल कलेवर दिखने लगता है। जाति, समाज, वर्णविभेद औचित्यहीन लगने लगता है। राम मर्यादाओं की स्थापना करने वाले हैं। लंका विजय के बाद जब राम माता सीता से कहते हैं कि तुम अब कहीं भी जाने को स्वतंत्र हो तो एकत्रित समाज हाहाकार कर उठता है। वह स्वयं से नहीं, बल्कि सर्व समाज से सीता की स्वीकार्यता चाहते हैं। सीता चरित्र के उच्चतम स्तर तक पहुंचती हैं। यहां से संपूर्ण समाज सदियों तक सर्वदा सीता के साथ खड़ा मिलेगा। राम विभिन्न खांचों में विभाजित जातीय समूहों को जोड़ते एवं सूत्र में पिरोते चलते हैं। सुग्रीव और जामवंत अलग अलग सामाजिक वर्गों से थे, लेकिन वे दोनों समूह राम के सैनिक बने। अनेकता में एकता की राष्ट्रीय धारणा के आदि पुरुष राम हैं। राम राष्ट्रनायक हैं और निर्बलों को सत्ता अधिकार देने वाले भी। वह आर्य भी हैं और द्रविड़ भी। शैव भी हैं और वैष्णव भी। वस्तुत: इसीलिए वह आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उन्होंने आदर्शों की स्थापना के लिए अनगिनत त्याग किए और वह भी कर्तव्य भाव से। इसीलिए वह कर्तव्य पथ के महानायक भी हैं और जन-जन के उद्धारक भी।

(लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हैं)